हिन्दी एसोसिएशन
"ज्ञान मंजूषा"
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक : 05 अक्टूबर 2023

विषय: प्रथम वर्ष के लिए नवांगतुक प्रोग्राम

दिनांक 5 अक्टूबर 2023, को 2:00- 4:00 बजे हिन्दी विभाग ने जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज के ऑडिटोरियम में प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों हेतु नवांतुक प्रोग्राम का आयोजन किया।संयोजिका हिन्दी एसोसिएशन (ज्ञान मंजूषा) डॉ विनिता रानी और डॉ मंजरी ने उपस्थित सभी हिन्दी विशेष नवागंतुक छात्राओं के साथ द्वितीय व तृतीय वर्ष के छात्राओं का स्वागत किया। इस कार्यक्रम में जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की प्राचार्य प्रो. स्वाति पाल भी उपस्थित थी। प्रो. स्वाति पाल ने छात्राओं का स्वागत करते हुए, उन्हें अपनी पढ़ाई के प्रति प्रोत्साहित किया।

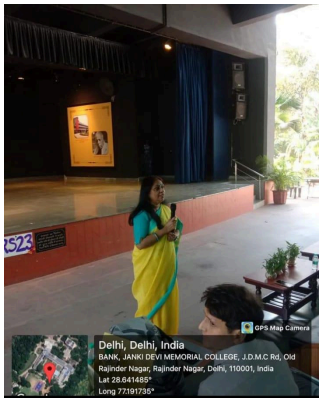

प्रथम वर्ष की सभी छात्राओं ने रैंप वॉक के साथ अपना परिचय देते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। इस कार्यक्रम में निर्णायक के रूप में डॉ दीनदयाल और डॉ. राहुल प्रसाद रहे।डॉ.दीनदयाल ने छात्राओं से उनकी अभिरुचि पर बात करते हुए कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। कार्यक्रम में द्वितीय और तृतीय वर्ष की छात्राओं ने अपने नृत्य से कार्यक्रम को उर्जावान बनाया। कार्यक्रम के अंत में निर्णायको द्वारा प्रथम द्वितीय व तृतीय पुरस्कार से छात्राओं को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन द्वारा हुआ।

हिंदी एसोशिएशन
"ज्ञान मंजूषा"
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक -31 अक्टूबर 2023

विषय - लेखिका से मुलाकात
लेखिका- मैत्रेई पुष्पा

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की हिंदी एसोशिएशन "ज्ञान मंजूषा" द्वारा कॉलेज के सेमीनार कक्ष में 10:00-12:00 बजे तक व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमे प्रसिद्ध लेखिका मैत्रेई पुष्पा को आमंत्रित किया गया। संयोजिका डॉ विनीता रानी और डॉ मंजरी गुप्ता ने लेखिका मैत्रेई पुष्पा का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया।

तत्पश्चात् उनका साहित्यिक परिचय दिया गया ।मैत्रेई पुष्पा ने कार्यक्रम में छात्राओं को महिला सशक्तिकरण विषय पर बात करते हुए सृजनात्मक लेखन के लिए प्रोत्साहित किया।उन्होंने आगामी पीढ़ी के लिए छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि महिलाओं को अपने निर्णय खुद लेने चाहिए। उन्होंने छात्राओं को पढ़ने और जीवन में आत्मनिर्भर बनने पर बल दिया। लेखिका ने अपनी बात पर विराम देते हुए वहां उपस्थित सभी छात्राओं और प्राध्यापको को प्रश्न करने का अवसर दिया। लेखिका ने उन सभी प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर दिए, साथ ही उनकी आत्मकथा "गुड़िया भीतर गुड़िया"पर भी चर्चा हुई।

लेखिका ने बताया कि उन्होंने लिखने की शुरुआत कैसे की ?और लिखने के बाद प्रकाशित कराने के लिए क्या-क्या समस्याएं आई? एक महिला को लेखन के दौरान किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है,विशेष तौर पर जब वह आत्मकथा लिखती है,वह पितृसत्तात्मक व्यवस्था से जूझती है। महिलाओं को अपने हक के लिए आगे आना होगा, धार्मिक बेड़ियों को भी तोड़ना होगा जो गुलाम बनाती है,उन्होंने उस पर भी विस्तार से चर्चा की।
अंत में डा विनीता रानी और डॉ मंजरी गुप्ता ने सभी का औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

हिंदी एसोशिएशन
"ज्ञान मंजुषा"
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक-6 नवंबर 2023

विषय-"ज्योत्सना 23" में हिंदी एसोशिएशन की छात्राओं द्वारा स्टॉल लगाया गया।

दिनांक 6 नवंबर 2023 को जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दीवाली मेला के अवसर पर "ज्योत्सना 23" का आयोजन किया गया। हिन्दी एसोशिएशन "ज्ञान मंजूषा" की छात्राओं ने इस कार्यक्रर्य मेंएक स्टॉल लगाया गया।

छात्राओं ने अपनी प्रतिभा और लगन से स्टॉल में बिक्री एवं प्रदर्शन हेतु दीवाली के सजावटी समानबनाए व मेहंदी लगाने का अयोजन भी किया।

"ज्योत्सना 23"का शभु आरंभ प्रोफेसर स्वाती पाल ने सहृदय उल्लास से किया, तत्पश्चात कार्यक्रर्य का आरंभ हुआ।

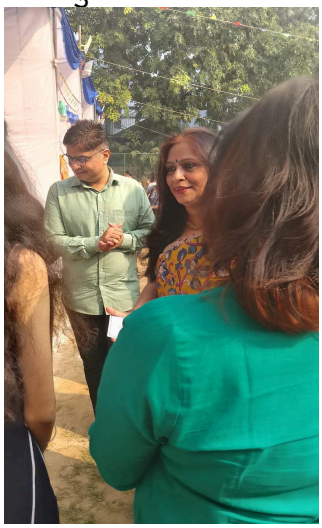

हिन्दी एसोशिएशन की आयोजिका डॉ विनीता रानी और डॉ मजंरी गुप्ता ने छात्राओं को प्रेरित किया। उन्होंने एसोशिएशन के स्टॉल का शभु आरंभ किया।छात्राओं ने अपनी प्रतिभा व उत्सकुता के साथ अपने स्टाल के समान की बिक्री शरू कर दी, छात्राओं को प्रेरित करने के लिए हिंदी विभाग के कई प्राध्यापक स्टॉल पर आए और छात्राओं का मनोबल बढ़ाया।

इस स्टाल में छात्राओं की भागीदारी वह उनकी लगन व कई दिनों के परिश्रम के कारण कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

हिंदी एसोशिएशन
"ज्ञान मंजूषा"
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक -6 फरवरी 2024

विषय - वर्तमान सिनेमा का बदलता परिदृश्य।

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की हिंदी एसोशिएशन "ज्ञान मंजूषा" द्वारा कॉलेज के सम्मेलन कक्ष में 10:30-12:30 बजे वर्तमान सिनेमा का बदलता परिदृश्य के विषय पर व्याख्यान आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत द्वीप प्रज्वलन से हुआ।

हिन्दी एसोसिएशन "ज्ञान मंजूषा" की संयोजिका डॉ विनीता रानी तथा डॉ मंजरी गुप्ता ने डॉ विनीत कुमार (फिल्म विशेषज्ञ)और डॉ मिहिर पंड्या (फिल्म आलोचक) का स्वागत प्लांटर देकर किया। कार्यक्रम की शुरुवात डॉ विनीता रानी ने 'थ्री इडियट, ' तारे जमीं पर', 'हिचकी', '12th फेल', गुठली' व दहाड़ जैसी फिल्मों पर चर्चा की। तत्पश्चात् फिल्म विशेषज्ञों का परिचय दे कर उनको व्याख्यान के लिए मंच पर आमंत्रित किया गया।

डॉ विनीत कुमार ने अपने व्याख्यान का आरंभ इस बात से किया कि आज के विद्यार्थी खुशनसीब हैं कि मौजूदा दौर में सिनेमा खुद क्लास रूम में आ चुका है, बीते दौर की तरह क्लास रूम से भाग कर सिनेमा देखने जाना नहीं पड़ता रहा है। किस प्रकार सिनेमा एक उद्योग के रूप में बदल गया। मौजूदा दौर में सिनेमा के दर्शक निष्क्रिय दर्शक नहीं है अब दर्शक प्रोजूमर है। करोना काल में सिनेमा की आमदनी कम हो गई। सिनेमा अब एक नितांत माध्यम नहीं है। मौजूदा दौर में सिनेमा देखे जाने का तरीका, जगह, चरित्र व कथानक सब बदल गया है, व्यवसायिक गतिविधि अब सिनेमा में अपनी जगह बना चुकी है। सिनेमा में अब ज्यादा आवाजाही हो रही है जिसके कारण सिनेमा से कुछ पात्र व परिवेश गायब हो रहे है।

सिनेमा में किसी एक विशेष किरदार, जाति व भाषा को लेकर पूर्वाग्रह/अवधारणा बनाई हुई है। डॉ विनीत कुमार ने अपने व्याख्यान में बताया कि सिनेमा विभिन्न कलाओं और तकनीक का संगम है।सिनेमा का मूल्यांकन उसी आधार पर होना चाहिए।इक्कीसवीं सदी का सिनेमा बहुत सारे आयामो को समेटे हुए है।डॉ मिहिर पंड्या ने अपने व्याख्यान में सिनेमा के उद्भव और विकास पर चर्चा की। पहले केवल 4-5 लोग एक साथ फिल्म देख सकते थे परंतु अब लगभग एक हज़ार से अधिक लोग एक साथ फिल्म देख रहे हैं क्योंकि अब सिनेमा को एक कम्युनिटी के रूप में देखते हैं। सिनेमा के शुरुआती दौर में स्क्रीन की दूरी अधिक थी, टेलीविजन ने स्क्रीन की दूरी कम कर दी। उन्होंने कहा कि पात्रों के जीवन में उतार चढाव ही आनंद का मूल है। पहले की फिल्म में पात्रों की पहचान को उजागर नही किया जाता था परंतु अब जाति, धर्म, व्यवसाय तथा स्थान सभी को उजागर किया जाता हैं उन्होंने (दबंग व दहाड़) का उदाहरण दिया। डॉ मिहिर पंड्या ने अपनी बात पर विराम देते हुए वहां उपस्थित सभी छात्राओं को प्रश्न करने का अवसर दिया। डॉ विनीत कुमार व डॉ मिहिर पंड्या ने उन सभी प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर दिया। अंत में डॉ विनीता रानी ने वर्तमान सिनेमा का परिदृश्य विषय के सभी बिंदुओं को समेट कर अपने विचार प्रकट किए और सभी का औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

हिन्दी एसोशिएशन
"ज्ञान मंजूषा"
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक - 6 मार्च 2024

विषय - वार्षिक खेल दिवस।

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज में 6 मार्च 2024 को वार्षिक खेल दिवस का आयोजन किया गया। वार्षिक खेल दिवस में विद्यार्थियों ने मार्च पास्ट प्रतियोगिता में भाग लिया, तथा अन्य विद्यार्थियों द्वारा रस्साकशी, योग, एरोबिक, सेल्फ डिफेंस का प्रदर्शन किया गया, खेल दिवस पर हिंदी एसोसिएशन "ज्ञान मंजूषा" द्वारा हिंदी विभाग के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

हिन्दी असोसिएशन की संयोजिका डॉ विनिता रानी और डॉ मंजरी गुप्ता ने हिंदी विभाग के विद्यार्थियों को मार्च पास्ट के लिए प्रोत्साहित किया।

वार्षिक खेल दिवस के अंत में प्राचार्य प्रो• स्वाति पाल ने प्रतिभागियों को पुरस्कार दे कर सम्मानित किया।

हिंदी एसोशिएशन
"ज्ञान मंजूषा"
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक - 26 अप्रैल 2024

विषय - मानवता के विकास में पर्यावरण की भूमिका।

वक्ता - डॉ अरुण उरांव
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की हिंदी एसोसिएशन "ज्ञान मंजूषा" द्वारा कॉलेज के कमरा नं• 69 में 12:00-1:00 बजे व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमें वक्ता डॉ अरुण उरांव को आमंत्रित किया गया। डॉ राहुल प्रसाद ने उनका परिचय दिया और संयोजिका डॉ विनिता रानी और डॉ मंजरी गुप्ता ने उन्हें लघु पादप देकर स्वागत किया। डॉ अरुण उरांव ने बताया किस प्रकार घोंघा, केचुआ, गिद्ध जैसे जानवर ये मानव जीवन से जुड़े हुए है,परंपरागत रूप से हम पर्यावरण को पूजते है और रक्षा करते हैं।

पर्यावरण को बचाने के लिए सरकार ने वन अधिनियम कानून बनाए। उन्होंने गुजरात के गांव का उदाहरण दिया जहां सूखे से स्थित बदतर थी। वहा के स्थानीय नागरिकों के अथक प्रयास से इस समस्या को दूर किया गया। इसी प्रकार महाराष्ट्र के मेधा गांव के जंगल की समाप्ति हो रही थी परंतु वहां के आदिवासी समुदाय ने 12 वर्षों तक जंगल को बचाने के लिए संघर्ष किया। दोनों स्थियां पर्यावरण के लिहाज़ से उम्मीद की किरण हैं।

झारखंड के फील्ड वर्क पर चर्चा करते हुए कहा चिरौंजी, इमली, साल, लाख मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि लाख का उपयोग दैनिक जीवन में किस-किस प्रकार में उपयोग करते हैं? पारंपरिक रूप से हम सारे पेड़ पौधे नहीं लगा सकते हैं, पर्यावरण को मनुष्य आवश्यकता अनुसार उपयोग करें और आगे आने वाली पीढ़ी

के लिए बचा कर रखें इसी के साथ डॉ अरुण उरांव ने अपनी बात समाप्त की। डॉ विनीता रानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

यह व्याख्यान सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

हिंदी एसोशिएशन
"ज्ञान मंजूषा"
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक -30 अप्रैल 2024

विषय- भारतीय नारी विमर्श और पश्चिम का नारीवाद
वक्ता -डॉ प्रेरणा मल्होत्रा

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की हिंदी एसोसिएशन “ज्ञान मंजूषा” द्वारा कॉलेज के सेमिनार हॉल में व्याख्यान आयोजित किया गया।

भारत में नारी के विचार क्या है और पश्चिम में नारी के विचार की तुलना वक्ता ने की। भारतीय धारणा के अनुसार ब्रह्म ने अपने आप को दो भागों में विभक्त किया है स्त्री और पुरुष। पुरुष और प्रकृति में कोई भेद नहीं है। हमारे ग्रंथों में स्त्री संबंधी विचार बताए गए हैं भारतीय स्त्रियां सदैव से विदुषी रही है। कौशल्या चारों वेदों को जानने वाली और ज्ञान से परिपूर्ण थी। द्रौपदी द्वारा भरी सभा में प्रश्न किया जाना एक सशक्त स्त्री का उदाहरण है।भारत की स्त्री वेदों की रचयिता है।भारत की नारी कभी भी अबला नहीं थी।

मंडन मिश्र कि पत्नी उभय भारती उनकी निर्णायक बनती है। उभय भारती आदि शंकराचार्य के साथ साक्षात्कार करती है,और उनसे गृहस्थी से जुड़े प्रश्न करती है।भारतीय समाज में पति-पत्नी के बिना कोई भी यज्ञ पूर्ण नहीं

होता है। मनुस्मृति में स्त्री के धन के बारे में लिखा गया है।।200 साल पहले क्रिश्चियनिटी में एडम और इव के बारे में बताया गया है। हस्बैंड का शाब्दिक अर्थ बच्चे स्त्री पशु पक्षी को बांधकर रखना है वह हस्बैंड कहलाता है भारतीय संभ्यता में सबको बांध कर नही रखता है, वह सबकी रक्षा करता है।,हमारे यहां चार पुरुषार्थ है धर्म ,अर्थ ,काम ,मोक्ष, और इस चारों पुरुषार्थ पर स्त्री और पुरुष दोनों का समान अधिकार है।यहां धर्म का पालन किया जाता है।उपनयन संस्कार बेटे तथा बेटियों का भी होता था।ऋग्वेद के अंदर स्त्री के विवाह और स्त्री के विवाह न करने का हक दिया गया है।महाभारत तथा रामायण में बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा का नियम नहीं देखने को मिलता।UN के डॉक्यूमेंट में सब जगह man शब्द था।UN के डॉक्यूमेंट में आज अगर वूमेन का शब्द है वह भारत का शब्द है वह भारत की ही देन है।

यह व्याख्यान सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

हिंदी एसोशिएशन
"ज्ञान मंजूषा"
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक - 1 मई 2024

विषय- असंगठित क्षेत्र में मजदूर
वक्ता -डॉ मनोरमा गोतम
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की हिंदी एसोसिएशन "ज्ञान मंजूषा" द्वारा कॉलेज के कमरा संख्या 17 में 12:00-1:00 बजे व्याख्यान आयोजित किया जिसमें वक्ता डॉ मनोरमा गोतम को आमंत्रित किया। अतिथि

सत्कार की परंपरा को ध्यान में रखते हुए डॉक्टर विनीता रानी ने डॉक्टर मनोरमा का स्वागत लघु पादप देकर कर किया।

तत्पश्चात कार्यक्रम का आरंभ डॉ मनोरमा के वक्तव्य से हुआ। उन्होंने अपने व्यक्तव की शुरुवात अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस से किया उसके बाद उन्होंने श्रमिकों के संघर्ष के इतिहास को बताया कि 1886 में शिकागो के श्रमिकों ने आंदोलन शुरू किया।उनके आंदोलन का मुख्य कारण अधिक काम तथा कम वेतन रहा। श्रमिकों की मांग स्वीकार कर ली गई 3 साल बाद 1889 को राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस घोषित किया गया।भारत में 1मई1923 को चेन्नई केएलपी पार्टी ने यह दिवस मनाया तब से भारत में प्रत्येक वर्ष 1मई को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया जाता है,

उन्होंने बाबा साहब द्वारा दिए गए तीन सिद्धांत संघर्ष करो, संगठित हो,शिक्षित बनो श्रमिकों के परिप्रेक्ष में रखकर बताया उन्होंने असंगठित क्षेत्र को परिभाषित करते हुए कहा कि मजदूर में एकता ना होने के कारण वह अपने अधिकारों से वंचित है। इनमें अमूमन निर्माण कार्य में लगे हुए पुरुषऔर स्त्री श्रमिक है जो ठेकेदारों द्वारा ले जाए जाते हैं। श्रमिकों से अधिक काम करवाते है, परंतु उनको उस मेहनत का मेहनताना नहीं मिलता तथा कई बीमारियों से ग्रस्त होते हैं। उनकी मांग की सुनवाई कहीं नहीं होती। वेतन का पूरा न मिलना दमा, टी बी, त्वचा तथा फेफरों संबंधी रोग उनकी प्रमुख समस्याएं हैं। गर्भवती महिलाओं को छुट्टी नहीं मिलती, उन्हें पुरुषों से कम वेतन मिलता है। दुर्घटना होने पर या मृत्यु होने पर उन्हें मुआवजा नहीं मिलता स्थिति इस बदतर है। मजदूरों पर

उन्होंने स्वरचित कविता से इस वक्तव्य का समापन किया। डॉ विनिता रानी ने सेक्स वर्कर्स पर हो रही समस्याओं को सामने रखा उन्होंने श्रमिकों के प्रति जागरूकता व्यवहार में संवेदनशीलता,नम्रता तथा उनके प्रति उदार बनने के लिए प्रेरित किया।बात कर रखी अंत में उन्होंने धन्यवाद ज्ञापन किया। यह व्याख्यान निःसंदेह ज्ञानवर्धक रहा।

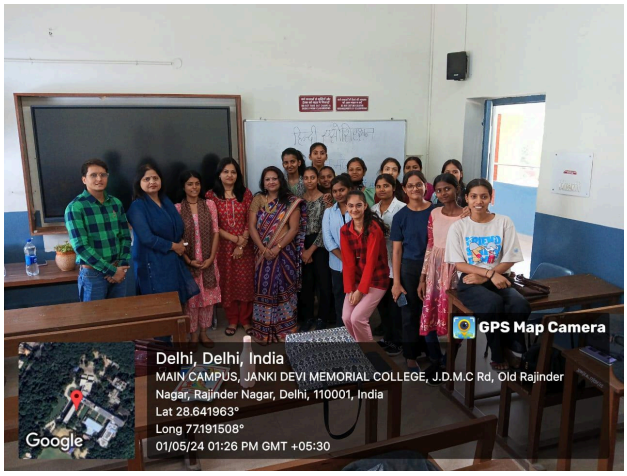

यह व्याख्यान सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

हिंदी एसोशिएशन
"ज्ञान मंजूषा"
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक -7 मई 2024

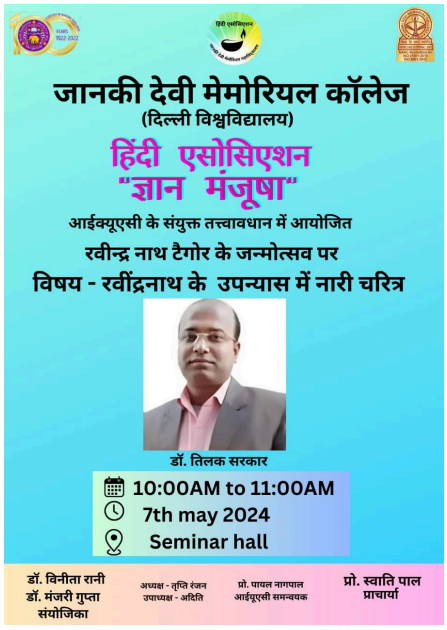

विषय- रविन्द्र नाथ के उपन्यास में नारी चरित्र
वक्ता - डॉ तिलक सरकार

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की हिंदी एसोसिएशन “ज्ञान मंजूषा” द्वारा कॉलेज के सेमीनार कक्ष में व्याख्यान आयोजित किया गया ।जिसमें वक्ता के रूप में जाकिर हुसैन कालेज के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ तिलक सरकार को आमंत्रित किया। डॉ विनिता रानी ने मंच का संचालन किया तथा डॉ मंजरी गुप्ता द्वारा लघु पादप देकर स्वागत किया।

वक्ता ने अपने व्याख्यान का आरंभ बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय से किया।बंकिम ने उपन्यासों के माध्यम से नारी अधिकारों की बात की।।रविंद्र नाथ टैगोर के उपन्यासों में नारी को नारी अधिकारों की बात की । परिवार में पुरुषों का ही वर्चस्व था। महिलाओं ने उस वर्चस्व के खिलाफ आवाज उठाई।किसी भी धर्म में मानवतावाद जरूरी है, इसलिए जात पात को नकारना भी जरूरी है।यह मानवता स्त्रियों को बराबर के अधिकार के संभव नहीं है, पर स्त्री गमन पुरुषों की समस्या को शिक्षा के द्वारा दूर किया जा सकता है, महिलाओं को सशक्त बनाना बेहद जरूरी है।

चतुरांगों में दो बातें महत्वपूर्ण है - अपना अधिकार और प्रेम।
नारी को आगे बढ़ाने के लिए हमें उन्हें प्रोत्साहित करना होगा और उन्हें शिक्षा देनी होगी इससे वह समाज में मजबूत बनेंगी ।अंत में डॉ विनिता रानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

यह व्याख्यान सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।